B.A. Part-I. सामान्य हिन्दी (रचना-अनिवार्य)

सूरदास का वात्सल्य वर्णन :-

सगुण भक्ति धारा की कृष्ण भक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास का जन्म 1478 ई० में 'सिही' में हुआ था। सूरदास के लिखे तीन प्रमाणिक ग्रंथ हैं - 'सूरसागर', 'साहित्य लहरी', 'सूरसारावली'।

सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम निधि है। सूर के वात्सल्य वर्णन में स्वाभाविकता विविधता रमणीयता एवं मार्मिकता है जिसके कारण ये वर्णन अत्यंत हृदयग्राही एवं मर्मस्पर्शी बन पड़े हैं। यशोदा के बहाने सूरदास ने मातृहृदय का स्वाभाविक, सरल और हृदयग्राही चित्र खींचा है। वात्सल्य के दोनों पक्षों - संयोग एवं वियोग का चित्रण सूरकाव्य में उपलब्ध है। सूरदास ने बालकृष्ण की लीलाओं का चित्ताकर्षक एवं मनोहारी चित्र अंकित किया है —

1. किलकत कान्ह घुटरुवनि आवत।
मनिमय कनक नन्द के आंगन बिम्ब पकरिबै धावत॥

सूरदास के वर्णन में बालमनोविज्ञान के दर्शन होते हैं। बालकों की खीज, पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा बुद्धि-चातुर्य अपराध को छिपाने की प्रवृत्ति आदि मिलते हैं। माता यशोदा बाल कृष्ण को दूध पिलाने के लिए यह लालच देती है कि दूध पीने पर तुम्हारी चोटी बढ़ जाएगी। तब कृष्ण अपनी माँ यशोदा से पूछते हैं —

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी ?
किती बार मोहि दूध पिवत भई यह अजहूँ है छोटी।

बाल कृष्ण माखन

खाते हुए रंगे हाथ पकड़े जाते हैं, किन्तु वह तर्क देते हैं कि —

मैया मैं नहीं माखन खायो ।
ख्याल परै ये सखा सबै मिलि मेरे मुख लपटायो ।।

बालक कृष्ण द्वारा चन्द्रमा को देखकर उसे प्राप्त करने के लिए मचल उठने का और हठ करने का मनोरम वर्णन कवि ने प्रस्तुत किया है —

मैया मैं तो चन्द खिलौना लैहौं ।
जैहौं लोटि धरनि मैं अबहिं तेरी गोद न ऐहौं ।

सूरदास जी अंधे थे परन्तु इन्हें दिव्य दृष्टि प्राप्त थी । ये भगवान के कीर्तनकार थे । जैसा भगवान का स्वरूप होता है, वे उसे अपनी बंद आँखों से वैसा ही वर्णन कर देते थे । सूरदास ने बाल क्रीड़ाओं का भी चित्रण सुन्दर ढंग से किया है । बलराम कृष्ण को चिढ़ाते हैं कि तू माता यशोदा का पुत्र नहीं है तू तो मोल लिया गया है ।

मैया मोहि दाऊ बहुत खिजायो ।
मोसों कहत मोल को लीन्हो तू जसुमति कब जायो ।

कृष्ण के मथुरा चले जाने पर माता का वात्सल्यपूर्ण हृदय अपने पुत्र के लिए विकल होने लगता है । उन्हें लगता है कि कृष्ण के आदतों से वे जितनी परिचित थीं उतना और कोई उसे नहीं जानता अतः देवकी को संदेश देती हैं —

संदेसो देवकी सों कहियो ।
हौं तो धाय तिहारे सुत की कृपा करति ही रहियो ।
जदपि टेव तुम जानति हौ तऊ मोहि कहि आवै ।
प्रात होत मेरे लाल लडैते माखन रोटी भावै ।।

माता यशोदा को पुरानी बातें बार-बार याद आती हैं और वह बार बार यही अभिलाषा करती हैं कि वह दिन न जाने कब आएगा जब मैं लोरी गाती हुई दिन-रात अपने श्याम सलोने को छाती से लगाकर खिलाया करूँगी —

निसि बासर छातिया ले लाऊँ बालक लीला गाऊँ।
वैसे भाग बहुरि कब ह्वैहैं मोहन गोद खिलाऊँ।

वास्तव में सूरदास जी ने श्री कृष्ण की बाल लीलाओं और मातृभावना को लेकर जिस रागात्मकता के साथ वात्सल्य रस की धारा प्रवाहित की है उससे वात्सल्य भाव को रसों में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है। निश्चय ही सूरदास वात्सल्य के सम्राट हैं और इनका वात्सल्य वर्णन हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।